ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

उत्तराखण्ड के प्रमुख धार्मिक स्थल

Important Religious Places of Uttarakhand

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 22/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

सारांश

भारत गाँवों का देश है यह भूमि अपनी विविधता के लिए जानी जाती है क्योंकि यहाँ भिन्न–भिन्न धार्मिक संस्कृति के लोग रहते हैं। भारत के ही उत्तर पूर्वी भू–भाग में अपनी अनुपम नैसर्गिक सौन्दर्य लिए स्थित है उत्तराखण्ड राज्य इस अंचल में बसे लोग अनेक प्रकार के देवी–देवताओं के प्रति आस्था रखते है। यह राज्य अपने धार्मिक स्थलों के लिए भी जाना जाता है। जैसे– बद्रीनाथ, केदारनाथ, चितई, नन्दादेवी, हाट कालिका, बागनाथ, इत्यादि इन धार्मिक स्थलों में देश विदेश से पर्यटकगण भ्रमण हेतु आते हैं।

India is a country of villages, this land is known for its diversity because people of different religious cultures live here. Uttarakhand state is located in the north eastern part of India with its unique natural beauty, people living in this region have faith in various types of deities. The state is also known for its religious sites. Such as - Badrinath, Kedarnath, Chittai, Nandadevi, Haat Kalika, Bagnath, etc., tourists from these countries come to visit these religious places.

संगीता
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थान सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय, नैनीड़ाडा, पौड़ी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड भारत

मुख्य शब्द : उत्तराखण्ड के धार्मिक प्रमुख स्थल, पंचबद्री, पंचकेदार, देवी मंदिर, देवताओं के मंदिर एवं शक्तिपीठ।
Religious Major Places of Uttarakhand, Panchbadri, Panchkadar, Devi Temple, Temple of Gods and Shaktipeeth.

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड राज्य में प्राकृतिक छटा व मोहक रोमांचकारी विविधता लिए हुए है जो कि पर्यटकों को स्वतः ही अपनी ओर आकर्षित करती है। प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में पर्यटकगण इस पावन भूमि के धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु आते हैं, यहाँ उत्तराखण्ड के कुछ प्रसिद्ध तीर्थस्थल का उल्लेख किया गया है जो कि तीर्थाटन के लिए प्रसिद्ध है ।

बद्रीनाथ

बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण जगत् गुरू शंकराचार्य द्वारा हिन्दू धर्म के उत्थान हेतु किया गया था, यह धाम देश के चार धामों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह भारत के उत्तर भाग में नर और नारायण दो पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित है, यह मंदिर प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में यह मंदिर अप्रैल से मई माह में खुलता है और शरद ऋतु में यह नवम्बर माह के तिसरे सप्ताह में इस मंदिर के कपाट बन्द हो जाते हैं। ''बद्रीनाथ धाम के पुजारी दक्षिण भारत स्थित मालाबाद क्षेत्र के आदि शंकराचार्य के वंशजों में से होते हैं जिन्हें 'रावल' कहा जाता है।''[1]

पंच बद्री मंदिरों में आदिबद्री मंदिर कर्णप्रयाग में, भविष्यबद्री जोशीमठ, वृद्धबद्री अणिमठ, योगध्यानबद्री पाडुकेश्वर में स्थित है।

केदारनाथ

केदारनाथ रूद्रप्रयाग में स्थित है यह बारह(12) ज्योर्तिलिंगों में से एक है। यहाँ भगवान शिव की पूजा होती है। यह मंदाकिनी नदी के शीर्ष में स्थित है। यह मंदिर पत्थरों निर्मित है जो कि कत्यूरी शैली में बना है इसके बारे में कहा जाता है ''कि इसका निर्माण पाण्डव वंश के जनमेजय ने कराया था। यहाँ स्थित स्वंयभू शिवलिंग अति प्राचीन है। आदि शंकराचार्य ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था।''[2] शीतकाल में छः माह के लिए मंदिर के कपाट बन्द रहते हैं।

पंच केदारों में तुंगनाथ, रूद्रनाथ, मदमहेश्वर, कल्पेश्वर एवं केदारनाथ हैं।

रूद्रनाथ और कल्पेश्वरनाथ महादेव चमोली जनपद में स्थित हैं तथा अन्य तीन मंदिर रूद्रप्रयाग जिले में हैं।

केदारनाथ

यहाँ भगवान शिव के पृष्ठ भाग की पूजा की जाती है।

रूद्रनाथ

इस मंदिर में शिव के रौद्र मुख की पूजा की जाती है।

कल्पेश्वर

यहाँ भगवान शिव के केश की पूजा की जाती है।

तुंगनाथ

इस मंदिर में शिव के हाथ की पूजा की जाती है यह सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित देव मंदिर है यहाँ आदिगुरू शंकराचार्य की एक 2.5 फीट ऊँची मूर्ति स्थित है।

मदमहेश्वरनाथ

यहाँ शिव के नाभि की पूजा होती है। वर्षा ऋतु में इस मंदिर के आस पास ब्रह्मकमल खिलते हैं।

हेमकुण्ड साहिब

हेमकुण्ड साहिब उत्तराखण्ड के चमोली जिले में स्थित है। यह सिखों का पवित्र धार्मिक स्थल है यहाँ प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में देश के भिन्न–भिन्न प्रान्तों से सिख लोग इस गुरूद्वारा के दर्शन के लिए आते है। यह समुद्र तल से 4632 मीटर की उचांई में स्थित है। यह बर्फीली झील के किनारे सात पहाड़ों के बीच स्थित है। ऐसी मान्यता है कि ''यहाँ एक मंदिर था जिसका निर्माण भगवान राम के अनुज लक्ष्मण ने करवाया था सिखों के

दसवें गुरू गुरू गोबिन्द सिंह ने पूजा अर्चना की थी। बाद में इसे गुरूद्वारा घोषित कर दिया गया।''[3]

जागेश्वर

जागेश्वर मंदिर उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद में स्थित है इस मंदिर का निर्माण कत्यूरी राजा द्वारा करवाया गया यहाँ छोटे–बड़े कई मंदिर समूह है इस दिव्य मंदिर का प्राकृतिक सौन्दर्य अनुपम है। पुराणों के

अनुसार इस स्थान पर शिव जी तथा सप्त ऋषियों नें यहाँ तपस्या की थी, ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में प्राचीन काल में जो भी मनोकामना जिस रूप में मांगी जाती थी, वह उसी रूप में पूर्ण हो जाया करती थी। जिस कारण इसका भारी दुरूपयोग हो रहा था। इसलिए आठवीं सदी में आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा यहाँ महामृत्युंजय शिवलिंग की स्थापना की गई जिससे कि दूसरों के लिए बुरी मनोकामंना पूर्ण न हो सके और केवल यज्ञ अनुष्ठान से मंगलकारी मनोकामनायें ही पूर्ण हो सकती है।

नन्दा देवी मंदिर

माँ नन्दा देवी उत्तराखण्ड में गढ़वाल व कुमाऊं

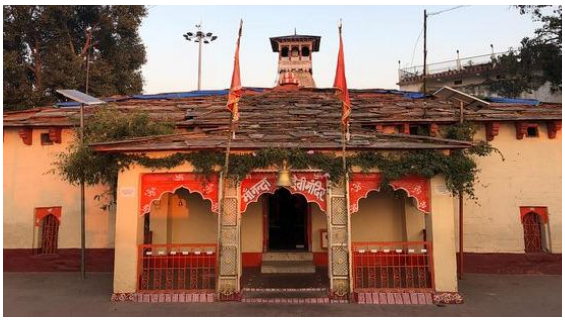

की ईष्ट देवी हैं। माँ नन्दा को दुर्गा का अवतार माना जाता है प्रत्येक वर्ष भाद्र मास में नन्दा अष्टमी मनायी

जाती है इस दिन कुमाऊं के अल्मोड़ा नगर में भव्य मेला लगता है। माँ नन्दा व सुनन्दा की मुख आकृति केले के पत्तों व तनों से निर्मित की जाती है। तथा डोली में बिठा कर माता की शोभा यात्रा निकाली जाती है।

चितई मन्दिर

कुमाऊं के प्रसिद्ध मंदिरों में चितई का अपना विशेष महत्व है। जो कि भगवान शिव के गोलू या गोलज्यू देवता का अवतार माना जाता है। गोलू देवता को न्याय का देवता भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि ''जिन्हे कहीं न्याय नहीं मिलता है वो इस मन्दिर में आकर स्टैम्प के कागज पर अर्जियां लिखकर मन्दिर की दिवारों में टांग देते हैं। न्याय मिलने पर प्रार्थी गोलू देवता को

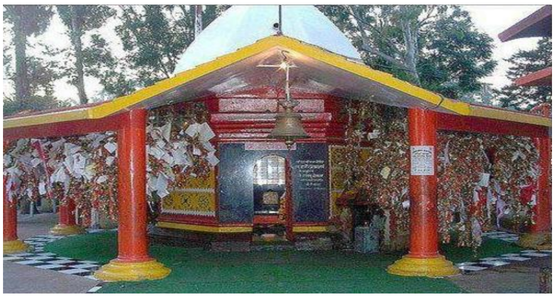

'घण्टी' चढ़ाकर पूजा करते हैं।''[4]

दूनागिरि मन्दिर

यह मंदिर जनपद अल्मोड़ा के द्वाराहाट में स्थित है। यह एक पौराणिक दुर्गा माता का शक्तिपीठ है। इस लिए इसका धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व भी है। पुरानी मान्यता है कि जब हनुमान संजीवनी बूटी लेकर जा रहे थें तो कुछ टुकड़े इस पहाड़ पर गिर गये जिसके कारण

दूनागिरि पर्वत बन गया। इस मंदिर से हिमालय के अनुपम दर्शन देखने को मिलते हैं।

देवीधुरा

यह बाराही देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन के दिन इस मन्दिर में मेला लगता है। इस मेले में लोकगीत व लोकनृत्य करते है और 'बग्वाल' भी खेला जाता है इस खेल में एक पक्ष दूसरे पक्ष के लोगों पर पत्थर फेंककर अपनी जीत सुनिश्चित करता है।

हाट कालिका मन्दिर

यह गंगोलीहाट में स्थित है यह एक सिद्ध पीठ है इस शक्तिपीठ की स्थापना आदिगुरू शंकराचार्य ने की थी। ऐसी मान्यता है कि माता रणभूमि में गये रणबाकुरौ की रक्षा सदैव एक रक्षक के रूप में करती है। नवरात्रि के

अवसर पर यहाँ हजारों की संख्या में बकरों की बलि दी जाती थी।

बागनाथ मन्दिर

बागेश्वर में बागनाथ शिव का प्राचीन मंदिर है। यहाँ भगवान शिव की पूजा की जाती है यह मन्दिर सरयू और गोमती नदी के संगम तट पर स्थित है। प्रत्येक वर्ष जनवरी के मध्य में यहाँ उत्तरायणी के मेले का आयोजन किया जाता है। हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहाँ स्नान करने आते हैं।

धारी देवी का मन्दिर

गढ़वाल क्षेत्र के श्रीनगर में यह मन्दिर स्थित श्रीनगर(गढ़वाल) में अलकनन्दा नदी के तट पर यह मन्दिर स्थित है ऐसी मान्यता है कि यह मूर्ति दिन के प्रत्येक चरण में परिवर्तित होती रहती है। ''मूर्ति का चेहरा पहले लड़की, फिर औरत तथा फिर बूढ़ी औरत में बदल जाता है।''[5]

सिद्धबली मन्दिर

खोह नदी के किनारे यह प्रसिद्ध मन्दिर कोटद्वार में है यहाँ श्री राम भक्त हनुमान जी की पूजा की जाती

है। इस मंदिर का जिक्र स्कन्द पुराण में भी है।मान्यता के अनुसार जिसकी मनोकामनाएं यहाँ पूरी होती हैं वो मंदिर में भण्डारा करवाता है।[6]

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

हर की पौड़ी

उत्तराखण्ड का पवित्र एवं पावन धार्मिक स्थलों मे से एक है हर की पौड़ी जो कि धार्मिक नगरी हरिद्वार में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि जब देवता व राक्षसों के मध्य समुद्र मंथन हुआ तो उसमें सर्व प्रथम हलाहल विष निकला जिसका पान शिव जी ने किया तथा अन्त में अमृत निकला, देवता अमृत का पान राक्षसों को नही कराना चाहते थे इसलिए वे उसे बचाते हुए ले जा रहे थे किन्तु कुछ बूँदें हरिद्वार में जिस स्थान में पड़ी वह स्थान 'हर की पौड़ी' कहलाया। श्रद्धालुओं का मानना है कि यहाँ स्नान करने से मानव जीवन व मृत्यु के चक्र से छूट जाता है और उसे परम मोक्ष की प्राप्ती होती है।

मनसा देवी मन्दिर

यह मन्दिर हरिद्वार में है यहाँ भगवान शिव की मानस पुत्री और नागों की देवी माता मनसा की पूजा की जाती है। ''विष की देवी के रूप में इनकी पूजा झारखण्ड,बिहार और बंगाल पंचांग के अनुसार भादों महीने मे पूरे माह इनकी स्तुति होती है।''[7]

चंडी देवी मन्दिर

यह मन्दिर हरिद्वार में स्थित है यहाँ माँ चंडी की पूजा की जाती है। माँ चंडी का यह मंदिर 52 शक्तिपीठों में से एक है। इस मंदिर का निर्माण कश्मीर के राजा सुचेत सिंह केद्वा ने सन 1929 ई0 में करवाया गया था। ऐसा कहा जाता है कि आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा 8 वीं शताब्दी में चंडी देवी की मूल प्रतिमा को स्थापित किया गया था। लोक कथा के अनुसार – ''नील पर्वत का वह स्थान है, जहाँ हिन्दू देवी चंडिका ने शुंभ और निशुंभ राक्षसों को मारने के बाद कुछ समय आराम किया था।''[8]

बिल्केश्वर महादेव मंदिर

यह मंदिर हरिद्वार के निकट ''बिल्व पर्वत'' पर स्थित है इस मंदिर में भगवान शिव की पूजा–आराधना की जाती है इस मंदिर के बारे में यह कहा जाता है ''कि माता पार्वती जी यहाँ बेलपत्र खाकर अपनी भूख शांत किया करती थीं, लेकिन जब पीने के लिए पानी की समस्या आती थी तब देवताओं के आग्रह पर स्वयं परमपिता ब्रह्मा अपने कमंडल सें गंगा की जलधारा प्रकट करते थे।''[9]

इसी मंदिर के पास ही गौरी कुण्ड है ऐसा माना जाता है कि इस कुण्ड में स्नान करने के पश्चात् शिव की अराधना और तपस्या करके भक्तगण शिवजी की कृपा का पात्र बनते हैं।

बिनसर महादेव

यह मंदिर पौड़ी व चमोली गढ़वाल के सीमा में दूधातोली श्रेणी पर स्थित है। इस मंदिर में अनेक श्रद्धालु आते हैं। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा के दिन भव्य मेला लगता है। यह मंदिर अपने पुरातत्व समृद्धि के लिए भी प्रसिद्ध है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

पातालभुवनेश्वर

यह मंदिर जनपद पिथौरागढ़ के गंगोलीहाट के पास एक प्राकृतिक गुफा के भीतर स्थित है। इस गुफा की खोज राजा ऋतुपर्णा ने की थी जो कि सूर्य वंश के राजा थे। गुफा में एक–एक कर प्रवेश किया जाता है। भीतर प्रवेश करने पर सूर्य विष्णु, उमा, महिषासुर मर्दनी, इत्यादि की प्रतिमा दिखती है।स्कन्दपुराण में वर्णन है कि स्वयं भगवान महादेव शिव यहाँ विराजमान हैं तथा अन्य देवी देवता उनकी स्तुति करने आते हैं। गुफा की सबसे खास बात यहाँ का शिवलिंग है जो लगातार बढ़ रहा है।

कसार देवी मंदिर

अल्मोड़ा से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित माँ दुर्गा का मंदिर स्थित है इस मंदिर परिसर से दूर–दूर तक फैली हिमालय की पर्वत श्रृखलाएं दिखाई देती हैं। कहा जाता है कि ''इस मंदिर की स्थापना ईसा से दो सौ वर्ष पहले हो चुकी थी। इस मंदिर का धार्मिक महत्व बहुत अधिक आंका जाता है।''[10] इस मंदिर की जो मूर्तियाँ हैं उनका पुरातात्विक दृष्टि से भी विशेष महत्व है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड को देव भूमि कहा जाता है यह राज्य जहाँ एक ओर अपनी प्राकृतिक मनोहारी छटा के लिए जाना जाता है वही दूसरी ओर यहाँ कई धार्मिक स्थल हैं। प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण आध्यात्मिक सुख की प्राप्ती हेतु आते हैं। उत्तराखण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य सैलानियों को यहाँ आने के लिए विवश करता है। श्रद्धालु रास्तों की परेशानी को भूलकर अपनी आस्था के सहारे इन स्थलों तक पहुँच जाते हैं और बड़े भक्तिभाव से दुर्गम से दुर्गम यात्रा को भी सुगम बना देते हैं। उत्तराखण्ड अपने प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध राज्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, प्रकाशक – बौद्धिक प्रकाशन, प्रधान कार्यालय, ठ.4।, श्री राम भवन, देवनगर, झूंसी, इलाहाबाद (उ0प्र0)*
2. *वीकिपीडिया*
3. *वीकिपीडिया*
4. *कुमाऊं में पर्यटन, डॉ0 शिवानन्द नौटियाल, प्रकाशक – श्री विनोद प्रसाद अग्रवाल, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, द माल, अल्मोड़ा 263601, उ0प्र0, भारत*
5. *उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, प्रकाशक – बौद्धिक प्रकाशन, प्रधान कार्यालय, ठ.4।, श्री राम भवन, देवनगर, झूंसी, इलाहाबाद (उ0प्र0)*
6. *वीकिपीडिया*
7. *वीकिपीडिया*
8. *वीकिपीडिया*
9. *वीकिपीडिया*
10. *कुमाऊं में पर्यटन, डॉ0 शिवानन्द नौटियाल, प्रकाशक – श्री विनोद प्रसाद अग्रवाल, श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, द माल, अल्मोड़ा 263601, उ0प्र0, भारत*